KHUSH NASIBI KI KIRNE (HINDI)

बड़ी रातों के इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त की म-दनी बहारें (हिस्सा 1)

ख़ुश नसीबी की किरनें

(और दीगर 10 म-दनी बहारें)

- बाग़ी ग्रूप के रुक्न की तौबा 08
- मक्कतुल मुकर्रमा की ज़ियारत 15
- शु-रकाए इज्तिमाअ् के लिये बिशारत 17
- जश्ने विलादत और दा'वते इस्लामी 22
- रहमत की बूंदें 24
- दिल की कलियां महका दीं 28

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्म व ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (المُستطرَف ج ۱ ص ٤٠ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ख़ुश नसीबी की किरनें

येह रिसाला (**ख़ुश नसीबी की किरनें**)

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में पेश किया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाला को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है, इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,

तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद, गुजरात।

MO. 09374031409 E-mail : maktabahind@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले "**मस्जिदें ख़ुश्बूदार रखिये**" में ह़दीसे पाक नक़्ल फ़रमाते हैं कि रसूले अकरम, **नूरे मुजस्सम**, शाहे बनी आदम, **नबिय्ये मुह़्तशम, शाफ़ेए़ उमम** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे रह़मत बुन्याद है : "जो मुझ पर मेरे ह़क़ की ता'ज़ीम के लिये दुरूदे पाक भेजे, **अल्लाह** तआ़ला उस दुरूदे पाक से एक फ़िरिश्ता पैदा फ़रमाता है जिस का एक बाज़ू मशरिक़ में एक मग़रिब में, **अल्लाह** तआ़ला उसे हुक्म फ़रमाता है صَلِّ عَلٰی عَبْدِی! کَمَا صَلّٰی عَلٰی نَبِیِّی, या'नी : दुरूद भेज मेरे इस बन्दे पर जैसे इस ने दुरूद भेजा मेरे नबी صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर । वोह फ़िरिश्ता क़ियामत तक उस पर दुरूदे पाक भेजता रहता है ।" (القَوْلُ البَدِیْع،ص ۲۵۱،مؤسسة الریان)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ख़ालिक़े काएनात है । उस ने मुख़्तलिफ़ अश्या को पैदा फ़रमाया और उन में से बा'ज़ को बा'ज़ पर फ़ज़ीलत दी । म-सलन बा'ज़ अम्बिया को

बा'ज़ अम्बिया पर, बा'ज़ मलाएका को बा'ज़ मलाएका पर, बा'ज़ सह़ाबा को दीगर सह़ाबा पर, बा'ज़ औलिया को बा'ज़ औलिया पर, बा'ज़ मक़ामात को बा'ज़ मक़ामात पर और बा'ज़ अय्याम को बा'ज़ अय्याम पर फ़ज़ीलत दी। इसी त़रह़ **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला ने बा'ज़ रातों को भी बा'ज़ रातों पर फ़ज़ीलत बख़्शी है। म-सलन शबे क़द्र, शबे बराअत, शबे **मे'राज**, शबे जुमुअ़तुल मुबारक, शबे आ़शूरा, रबीउ़न्नूर शरीफ़ की बारहवीं रात, ईदुल फ़ित्र की रात और रजब की पहली और सत्ताईसवीं रात। इन मुक़द्दस रातों में से कुछ के मु-तअ़ल्लिक़ वारिद फ़ज़ाइल मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये।

शबे क़द्र की फ़ज़ीलत

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **"मक-त-बतुल मदीना"** की मत़्बूआ़ 1548 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"फ़ैज़ाने सुन्नत** (जिल्द अव्वल)" के सफ़ह़ा 1136 पर अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ह़दीसे पाक नक़्ल फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : एक बार जब माहे र-मज़ानुल मुबारक तशरीफ़ लाया तो सुल्त़ाने दो जहान मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमियान, सरवरे ज़ीशान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तुम्हारे पास एक महीना आया है जिस में एक रात

ऐसी भी है जो हज़ार महीनों से अफ़्ज़ल है। जो शख़्स इस रात से मह्रूम रह गया, गोया तमाम की तमाम भलाई से मह्रूम रह गया और इस की भलाई से मह्रूम नहीं रहता मगर वोह शख़्स जो ह़की़-क़तन मह्रूम है।" (سنن ابن ماجه، ج۲،ص۲۹۸،الحدیث ۱۶۴۴دارالکتب العلمیه بیروت)

शबे बराअत की फ़ज़ीलत

इसी किताब के सफ़्ह़ा 1381 पर ह़दीसे पाक नक़्ल फ़रमाते हैं कि **उम्मुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا से रिवायत है, ताजदारे रिसालत, सरापा रह़मत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ शा'बान की पन्दरहवीं शब में तजल्ली फ़रमाता है। इस्तिग़फ़ार (या'नी तौबा) करने वालों को बख़्श देता और त़ालिबे रह़मत पर रह़्म फ़रमाता और अ़दावत वालों को जिस ह़ाल पर हैं उसी ह़ाल पर छोड़ देता है।" (شُعب الایمان ج۳،ص۳۸۲،الحدیث۳۸۳۵دارالکتب العلمیه بیروت)

शबे मे'राज की फ़ज़ीलत

और सफ़्ह़ा 1368 पर ह़दीसे पाक नक़्ल फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि **अल्लाह के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "रजब में एक दिन और रात है। जो इस दिन का रोज़ा रखे और रात को क़ियाम (इ़बादत) करे तो गोया उस ने सो साल के रोज़े रखे और येह रजब

की सत्ताईस तारीख़ है । इसी दिन मुह़म्मद صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मबऊ़स फ़रमाया ।''

(شُعب الاِیمان ج۳،ص۳۷٤،الحدیث۳۸۱۱دارالکتب العلمیه بیروت)

आह ! दीन से दूरी के सबब आज मुसल्मानों की अक्सरिय्यत इन मु-तबर्रक, मुक़द्दस व अ़ज़ीमुश्शान रातों को भी आ़म रातों की त़रह़ ग़फ़्लत की नज़्र कर देती है । इन को ख़बर तक नहीं होती कि हम कितनी बा ब-र-कत रात की ब-र-कतों से मह़रूम रह गए । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** का म-दनी माह़ोल हर मुआ़-मले में हमारी रहनुमाई करता है । इसी त़रह़ दा'वते इस्लामी का पाकीज़ा म-दनी माह़ोल इन मुक़द्दस रातों को अह़सन त़रीक़े से बसर करने में भी हमारी ख़ूब रहनुमाई करता है । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के तह़त इन मुक़द्दस रातों को इ़बादत में गुज़ारने के लिये मु-तअ़द्दद शहरों में इज्तिमाआ़त का सिल्सिला होता है, म-सलन इज्तिमाए़ मीलाद, इज्तिमाए़ शबे मे'राज, इज्तिमाए़ शबे बराअत, इज्तिमाए़ शबे क़द्र और बड़ी ग्यारहवीं शरीफ़ के सिल्सिले में इज्तिमाए़ ज़िक्रो ना'त । इन बा ब-र-कत इज्तिमाआ़त में हज़ारों इस्लामी भाई शिर्कत करते और रह़मतों से अपनी ख़ाली झोलियां भरते हैं । इस मौक़अ़ पर मु-तअ़द्दद म-दनी बहारें भी वुक़ूअ़

पज़ीर होती हैं, म-सलन गुनाहों से नजात की सआ़दत, नेकियां करने का जज़्बा, तौबा करने की सआ़दत, मुक़द्दस मक़ामात की ज़ियारत, दौराने इज्तिमाअ़ गुनू-दगी में सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत, म-दनी माहोल से वाबस्तगी और जिस्मानी अमराज़ से नजात वग़ैरा । इसी क़िस्म की म-दनी बहारों पर मुश्तमिल रिसाला बनाम **''ख़ुश नसीबी की किरनें''** और दीगर 11 म-दनी बहारें दा'वते इस्लामी की मजलिस **अल मदीनतुल इल्मिय्या** मक-त-बतुल मदीना के तआ़वुन से पेश करने की सआ़दत ह़ासिल कर रही है। इन बहारों का ख़ुद भी मुत़ा-लआ़ कीजिये और इन मुबारक इज्तिमाआ़त की अहम्मिय्यत उजागर करने के लिये दूसरे इस्लामी भाइयों को भी इस की तरग़ीब दिलाइये ।

अल्लाह तआ़ला हमें **''अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश''** करने के लिये **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल, **म-दनी क़ाफ़िलों** का मुसाफ़िर बनते रहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और **दा'वते इस्लामी** की तमाम मजालिस ब शुमूल मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** को दिन पच्चीसवीं रात छब्बीसवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए । اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

शो'बए अमीरे अहले सुन्नत मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

29 **रबीउ़न्नूर** सि. 1431 हि. **16** मार्च सि. **2010** ई.

﴾1﴿ ख़ुश नसीबी की किरनें

शकर गढ़ (नारोवाल, पंजाब) के मुक़ीम इस्लामी भाई ने इज्तिमाए़ मीलाद की एक म-दनी बहार बयान की जिस का ख़ुलासा पेशे ख़िदमत है : तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मुश्कबार म-दनी माह़ोल से वाबस्तगी से क़ब्ल मैं दीनी मा'लूमात से कोसों दूर, बे मुरुव्वत व बे वफ़ा दुन्या की मह़ब्बत में मसरूर, गुनाहों से भरपूर ज़िन्दगी के शबो रोज़ बसर कर रहा था। फ़िल्मों, डिरामों का ह़द द-रजे का शैदाई था **गाने सुनने की इस क़दर लत पड़ चुकी थी कि मैं ने अपनी पसन्द के गानों की लिस्ट बना रखी थी,** जिस गाने का मूड हुवा वोह रेकॉर्ड करवाया और सुनने में मसरूफ़ हो गया। अल ग़रज़ मैं इन्तिहा द-रजे का **मन मोजी** (आवारा मिज़ाज) था। हुब्बे दुन्या में इस क़दर ग़रक़ था कि नमाज़ों की परवाह ही न थी। आख़िर कार मेरी ख़ज़ां रसीदा तारीक ज़िन्दगी में **ख़ुश नसीबी की किरनें** फूटीं। हुवा कुछ यूं कि सि. 1427 हि. ब मुत़ाबिक़ सि. 2006 ई. में जब कि रबीउ़न्नूर शरीफ़ का मुक़द्दस महीना अपनी आबो ताब से ज़मीन के सीने को मुनव्वर कर रहा था और इस मुक़द्दस माह की रह़मतों और ब-र-कतों से भरपूर फ़ज़ाएं हर जानिब अपनी ब-र-कतें लुटा रही थीं। एक रोज़ एक इस्लामी भाई ने इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए मुझे येह ज़ेह्न दिया कि

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के तह़्त हर साल रसूले अ़-रबी صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की विलादत की ख़ुशी में इज्तिमाए़ मीलाद का इन्ड़क़ाद किया जाता है। ह़स्बे मा'मूल इस साल भी इज्तिमाए़ मीलाद मुन्अ़क़िद होगा आप इस इज्तिमाअ़ में ज़रूर शिर्कत कीजियेगा, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ढेरों ब-र-कतें ह़ासिल होंगी। एक आ़शिक़े रसूल की मुख़्लिसाना दा'वत कारगर साबित हुई और मैं ने उस इज्तिमाअ़ में शिर्कत की निय्यत कर ली। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ रबीउ़न्नूर शरीफ़ की पाकीज़ा महकी महकी फ़ज़ाओं से क़ल्ब मह़ज़ूज़ होता रहा। आख़िर कार वोह दिन भी आ पहुंचा कि मैं अपनी निय्यत को अ़-मली जामा पहनाने के लिये दा'वते इस्लामी के तह़्त रबीउ़न्नूर शरीफ़ की बारहवीं शब में होने वाले इज्तिमाए़ मीलाद में ब-र-कतें लूटने के लिये आ पहुंचा, जब मेरी आंखों ने एक वलिय्ये कामिल शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के नूरानी चेहरे की ज़ियारत से मुशर्रफ़ होने की सआ़दत ह़ासिल की तो आप की ज़ियारत की चाश्नी आंखों के रास्ते दिल में उतरती चली गई, मेरी क़ल्बी कैफ़िय्यत बदलने लगी और दिल का ज़ंग दूर होता चला गया। इज्तिमाए़ मीलाद से ह़ासिल होने वाली ब-र-कतों का कुछ शुमार नहीं। उस इज्तिमाअ़ में शिर्कत की ब-र-कत से मेरे दिल से दुन्या की मह़ब्बत मिटने लगी और दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से मह़ब्बत बढ़ने

लगी क्यूं कि येह म-दनी माहोल ही है जिस में बेचैनों को चैन मिलता है, परेशान ह़ालों को सुकून की दौलत मुयस्सर आती है, दिल के अन्धों को चश्मे हिदायत मिलती है अल ग़रज़ इज्तिमाए़ मीलाद के बा रौनक़ लम्ह़ात ने मेरी ज़िन्दगी की काया ही पलट दी और मैं अपने साबिक़ा गुनाहों से ताइब हो कर शैख़े त़रीक़त, **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मह़ब्बत का असीर हो गया। मैं ने अपने सर पर अ़त्तारी होने का सेहरा भी सजा लिया। आज बि फ़ज़्लिही तआ़ला मैं ना'ते रसूले मक़्बूल सुन कर अपने दिलो दिमाग़ को रोशन करता हूं। नमाज़ें पढ़ने, सुन्नतों पर अ़मल करने का शौक़ पैदा हो चुका है **अल्लाह** तआ़ला मुझे म-दनी माहोल में इस्तिक़ामत की दौलत अ़त़ा फ़रमाए।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾2﴿ बाग़ी ग्रूप के एक रुक्न की तौबा

गोजरां वाला (पंजाब, पाकिस्तान) के मुक़ीम इस्लामी भाई का तह़रीरी बयान कुछ इस त़रह़ है : अच्छी सोह़बत मुयस्सर न होने के बाइ़स मैं गुनाहों की ज़न्जीरों में जकड़ता चला जा रहा था। **गन्दी फ़िल्में देखना, शराब नोशी और इन के इलावा ऐसे ऐसे घिनावने गुनाहों में मुलव्वस हो चुका था कि जिन का**

तज़्किरा करने की मुझ में हिम्मत नहीं । मेरे अख़्लाक़ इस क़दर बिगड़ चुके थे कि गुन्डा गर्दी, बद मुआ़शी और चोरी जैसे क़बीह़ अफ़्आ़ल करने के लिये हम ने एक ग्रूप तश्कील दिया जिस का नाम **''बाग़ी ग्रूप''** तज्वीज़ पाया । आह ! हमारी बद बख़्ती, कि रात की तारीकी में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दों में से कुछ ख़ुश नसीब तो इ़बादतों में मश्ग़ूल होते और कुछ महूवे ख़्वाब होते लेकिन **हमारी रातें चोरी कर के अपने नामए आ'माल सियाह करने में बसर होतीं ।** इसी ग़फ़्लत में मेरी ज़िन्दगी के शबो रोज़ बसर होते रहे और मुझे अपनी ज़िन्दगी के अनमोल हीरों के ज़ाएअ़ होने का एह़सास तक न हुवा । हमारे अ़लाक़े में दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता एक इस्लामी भाई तशरीफ़ लाते और मुझ पर मह़ब्बत भरे अन्दाज़ में इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की तरग़ीब दिलाते । लेकिन मेरे दिल पर तो गुनाहों की कालक जमी हुई थी इस पर नेकी की दा'वत का क्या असर होता । मैं उन की नेकी की दा'वत की त़रफ़ तवज्जोह न देते हुए मुख़्तलिफ़ ह़ीलों बहानों से उन्हें मन्अ़ कर देता । लेकिन सलाम है उस आ़शिक़े रसूल की इस्तिक़ामत पर कि वोह मुसल्सल मुझ पर इन्फ़िरादी कोशिश करते रहे ह़त्ता कि मैं उन के मह़ब्बत भरे अन्दाज़ से मु-तअस्सिर हो कर कभी कभी इज्तिमाअ़ में शिर्कत करने लगा लेकिन मुझ पर **''न सुधरे हैं न सुधरेंगे क़सम खाई**

है'' की धुन सुवार रहती थी। मैं और मेरा दोस्त मिल कर इज्तिमाअ़ में शरीक इस्लामी भाइयों को ख़ूब तंग करते म-सलन हम किसी इस्लामी भाई को ''मदीना'' कह कर मुख़ातब करते और जैसे ही वोह हमारी जानिब मु-तवज्जेह होने लगते हम दूसरी त़रफ़ मुड़ जाते। मेरी गुनाहों भरी ज़िन्दगी में नेकियों की बहार कुछ इस त़रह़ आई कि एक मरतबा हमारे अ़लाक़े में होने वाले इज्तिमाअ़ में मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी के ख़ुसूसी बयान की तरकीब बनी। हमारे मह़ल्ले के इस्लामी भाई इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए मुझे भी उस इज्तिमाअ़ में साथ ले गए, घर से चलते वक़्त मेरे वहमो गुमान में भी न था कि इस इज्तिमाअ़ में शरीक होना मेरी इस्लाह़ का बाइ़स बन जाएगा बल्कि इस बार भी वोही सोच थी कि इस्लामी भाइयों को तंग कर के लुत़्फ़ अन्दोज़ होउंगा। मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी (रुक्ने शूरा व निगराने पाकिस्तान इन्तिज़ामी काबीना مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی) ने जब बयान शुरूअ़ किया तो उन के अल्फ़ाज़ तासीर का तीर बन कर यके बा'द दी-गरे मेरे दिल में पैवस्त होते चले गए। ख़ौफ़े ख़ुदा के मारे मुझ पर कपकपी त़ारी हो गई, मुबल्लिग़ इस्लामी भाई ने जब बे नमाज़ियों की सज़ाएं और ज़िना के मु-तअ़ल्लिक़ वईदें सुनाईं तो मेरा रुवां रुवां कांप उठा और मेरे साबिक़ा गुनाह एक एक कर के मेरी निगाहों के सामने फिरने लगे चुनान्चे मैं ने फ़ौरन माज़ी में सरज़द होने वाले तमाम गुनाहों से हाथों हाथ तौबा कर ली और

अपनी दुन्या व आख़िरत को संवारने के लिये महके महके मुश्कबार म–दनी माहोल से वाबस्ता हो गया। इस मुश्कबार व पाकीज़ा म–दनी माहोल ने मुझे हुब्बे दुन्या के झमेलों से रिहाई दिला कर न सिर्फ़ अत्तारी ताज सजाया बल्कि सुन्नतों की ख़िदमत का जज़्बा भी अता फ़रमा दिया।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾3﴿ गुनाहों पर नदामत होने लगी

मर्कज़ुल औलिया (लाहोर) के एक इस्लामी भाई की तह़रीर का लुब्बे लुबाब है : दा'वते इस्लामी के म–दनी माह़ोल से वाबस्ता होने से पहले मैं ज़ियादा तर बद मज़्हबों की सोह़बत में रहता और مَعَاذَاللّٰه गुनाहों की ख़ौफ़नाक दलदल में इस क़दर फंसा हुवा था कि **शबो रोज़ फ़िल्में डिरामे देखना, फ़ह़ाशी के अड्डों पर चक्कर लगाना मेरे नज़्दीक बहुत फ़ख़्र वाला काम था।** आख़िर कार मेरी ज़िन्दगी के बुरे अय्याम अच्छे दिनों में तब्दील होने के अस्बाब बन ही गए वोह इस त़रह़ कि एक दिन मेरी मुलाक़ात दा'वते इस्लामी के म–दनी माह़ोल से वाबस्ता एक इस्लामी भाई से हुई। उन्हों ने इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए मुझे "**हंजर वाल**" में दा'वते इस्लामी के तह़त शबे बराअत के सिल्सिले

में होने वाले इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त में शिर्कत की दा'वत दी। उन की दा'वत पर मुझे उस मुबारक इज्तिमाअ़ में शिर्कत की सआ़दत मिली। मेरी ख़ुश क़िस्मती कि वहां मुझे शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का सुन्नतों भरा बयान सुनने की सआ़दत ह़ासिल हो गई। बयान इस क़दर पुरसोज़ और रिक़्क़त अंगेज़ था कि दौराने बयान मुझे अपनी गुनाहों भरी ज़िन्दगी पर नदामत होने लगी और मैं सोचने लगा कि अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नाराज़ हुवा तो मेरा क्या बनेगा ? इस तसव्वुर के आते ही मेरी आंखों की वादियों से आंसूओं के धारे बह निकले, मुझे अपने साबिक़ा गुनाहों पर नदामत होने लगी। बयान के बा'द हमारे अ़लाक़े के म-दनी क़ाफ़िला ज़िम्मादार इस्लामी भाई ने मुझे तीन दिन के म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करने की तरग़ीब दिलाई, दिल तो पहले ही चोट खा चुका था चुनान्चे उन की इन्फ़िरादी कोशिश के नतीजे में मैं म-दनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बन गया। दौराने म-दनी क़ाफ़िला बे शुमार सुन्नतें व आदाब सीखने के साथ साथ मुबल्लिग़ीन के सुन्नतों भरे इस्लाह़ी बयानात सुनने की सआ़दत ह़ासिल हुई तो मैं अपनी गुनाहों भरी ज़िन्दगी पर निहायत शरमिन्दा हुवा, मैं ने अपने तमाम साबिक़ा गुनाहों से तौबा कर ली। कुछ दिनों बा'द जब र-मज़ानुल मुबारक की आमद हुई तो मैं ने ए'तिकाफ़ की सआ़दत ह़ासिल की। उस ए'तिकाफ़ में एक ख़ुश नसीब

इस्लामी भाई को सत्ताईसवीं शब सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत हुई इस बात ने मेरे दिल में म-दनी माहो़ल की महब्बत को मज़ीद उजागर कर दिया। चुनान्चे इस के बा'द मैं मुकम्मल तौ़र पर दा'वते इस्लामी के म-दनी माहो़ल से वाबस्ता हो गया।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾4﴿ वुज़ू का दुरुस्त त़रीक़ा मा'लूम न था

शैख़ूपूरा (पंजाब, पाकिस्तान) के मुक़ीम इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है : म-दनी माहो़ल से वाबस्तगी से क़ब्ल मैं एक मॉडर्न नौ जवान था। गुनाहों की ज़ुल्मत भरी वादियों में इधर उधर भटक्ता फिर रहा था। नमाज़ों की अदाएगी और उमूरे दीनिया का कुछ ज़ेह्न न था। **दुन्यावी तौ़र पर पढ़ा लिखा होने के बा वुजूद दीन से इस क़दर दूरी थी कि वुज़ू का दुरुस्त त़रीक़ा तक मा'लूम न था।** मेरी गुनाहों से तारीक व सियाह ज़िन्दगी में नवीदे सुब्ह़ की पौ कुछ यूं फटी कि सि. 1428 हि. ब मुत़ाबिक़ सि. 2007 ई. को शबे बराअत की मुक़द्दस घड़ियों में हमारे क़रीबी क़ब्रिस्तान में दा'वते इस्लामी के तह़्त इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त की तरकीब थी। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा कर्दा तौफ़ीक़ से मैं भी उस इज्तिमाअ़ में शरीक हो गया। मुबल्लिग़े दा'वते

इस्लामी ने पन्दो नसीह़त के मोतियों से मुज़य्यन बयान शुरूअ़ किया तो ख़ौफ़ के मारे मुझ पर कपकपी त़ारी हो गई । मैं येह सोच सोच कर कफ़े अफ़्सोस मलने लगा कि आह ! मैं ने तो अपनी सारी ज़िन्दगी सरासर ग़फ़्लत में गुज़ार दी, मैं नमाज़ों से दूर, दीन से ला शुऊ़र और गुनाहों में रन्जूर हूं, आह ! मेरा क्या बनेगा ? येह सब सोच कर मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में हाथ उठा दिये और रो रो कर येह दुआ़ करने लगा : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू ही गुनहगारों, सियाह कारों, रियाकारों के ऐबों पर पर्दा डालने वाला है, मुझ सियाह कार को मुआ़फ़ फ़रमा दे । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ यूं मैं ने सिद्क़े दिल से अपने साबिक़ा गुनाहों से तौबा की और निय्यत की, कि अपनी ज़िन्दगी के बक़िय्या अय्याम दा'वते इस्लामी के महके महके मुश्कबार म-दनी माह़ोल के पुर बहार साएबान तले बसर करूंगा । इस त़रह़ शबे बराअत के इज्तिमाअ़ में शिर्कत की ब-र-कत से मुझे सुन्नतों भरी ज़िन्दगी नसीब हो गई । आज **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से इस मुश्कबार म-दनी माह़ोल की मुअ़त्त़र मुअ़त्त़र फ़ज़ाओं में मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी की हैसिय्यत से सुन्नतों की ख़िदमत में मसरूफ़ हूं ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾5﴿ मक्कतुल मुकर्रमा शरीफ़ की ज़ियारत

मर्कज़ुल औलिया (लाहोर) के एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है : मुझे दा'वते इस्लामी के ज़ेरे एहतिमाम होने वाले 27 र-मज़ानुल मुबारक के इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त में शिर्कत की सआ़दत मिली और उस इज्तिमाअ़ की ब-रकात से मैं बहुत महज़ूज़ हुवा । इज्तिमाअ़ के आख़िर में जब इख़्तितामी रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ शुरूअ़ हुई तो मैं भी ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ के साथ दुआ़ में शरीक हो गया, मुझे क्या पता था कि अपने गुनाहों का इक़रार कर के अपने रब عَزَّوَجَلَّ से बख़्शिश व मग़्फ़िरत का सुवाल करने वाले ऐसी **गिर्या व ज़ारी** करेंगे कि मुझ जैसे पथ्थर दिल को भी रोना आ जाएगा । **हर त़रफ़ से बे शुमार लोगों के रोने की आवाज़ें बुलन्द हो रही थीं,** इसी दौरान मुझ पर भी रिक़्क़त त़ारी हो गई ख़ौफ़े ख़ुदा की बदौलत दौराने दुआ़ मुझ पर ऐसी कैफ़िय्यत त़ारी हुई कि जिस ने मुझे दुन्या व मा फ़ीहा से बे ख़बर कर दिया । इसी कैफ़िय्यत के दौरान **मेरी क़िस्मत का सितारा चमका और मुझे "मक्कतुल मुकर्रमा" शरीफ़ की ज़ियारत नसीब हो गई ।** इस के बा'द मैं ने अपने साबिक़ा तमाम गुनाहों से सच्चे दिल से तौबा की और दा'वते इस्लामी के मुश्कबार म-दनी माह़ोल को अपना लिया । इस के इ़लावा मैं ने सर पर सब्ज़ सब्ज़ इ़मामा शरीफ़ का ताज भी सजा लिया ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صلَّى اللهُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴿6﴾ रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़

वज़ीरआबाद (पंजाब, पाकिस्तान) में मुक़ीम एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है : दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता होने से पहले मैं गुनाहों भरी ज़िन्दगी गुज़ार रहा था। मुझे येह प्यारा और नेक माह़ोल कुछ यूं मुयस्सर आया कि मैं सि. 1427 हि. ब मुत़ाबिक़ सि. 2006 ई. की गर्मियों की छुट्टियां गुज़ारने टेक्सेला में मुक़ीम अपनी ख़ाला के घर गया हुवा था, वहां H.M.C. फ़ेक्टरी की रिहाइशी कॉलोनी में दा'वते इस्लामी के ज़ेरे एहतिमाम शबे बराअत के सिल्सिले में इज्तिमाए़ ज़िक्रो ना'त मुन्अ़क़िद किया गया। मैं अपने ख़ालाज़ाद भाई के साथ उस इज्तिमाअ़ में शरीक हो गया, उस इज्तिमाअ़ की **इख़्तितामी रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ ने मेरे दिल की दुन्या ही बदल कर रख दी,** चुनान्चे मैं ने सिद्के़ दिल से गुनाहों से तौबा कर ली। मु-तअस्सिर तो पहले ही हो चुका था फिर जब वापस अपने गाउं आया तो एक इस्लामी भाई की इन्फ़िरादी कोशिश से मैं म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो गया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का करम है कि वोही लोग जो कल मुझे अपने क़रीब भी नहीं बैठने देते थे, मुझ से नफ़रत करते थे, इस माह़ोल की

ब-र-कत से अब वोह मुझ से मह़ब्बत करते हैं और मुझ जैसे गुनहगार को दुआ़एं करने के लिये कहते हैं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾7﴿ शु-रकाए इज्तिमाए़ मीलाद के लिये मग़्फ़िरत की बिशारत

बाबुल मदीना (कराची) आए हुए बैरूने मुल्क में मुक़ीम एक इस्लामी भाई के ह़लफ़िया बयान का ख़ुलासा है : अ़क़ाइद के मु-तअ़ल्लिक़ मा'लूमात न होने के बाइ़स मेरी ज़िन्दगी का इब्तिदाई ह़िस्सा बद अ़क़ीदा लोगों की सोह़बत में गुज़रा। ख़ुश क़िस्मती से मुझे **दा'वते इस्लामी** का ख़ुश अ़क़ीदा म-दनी माह़ोल मुयस्सर आ गया जिस की ब-र-कतों से मुझे **ईमान की ह़िफ़ाज़त** का म-दनी ज़ेह्न मिला और सह़ीह़ अ़क़ीदे की पहचान नसीब हुई। मैं शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार** क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से बैअ़त हो कर अ़त्त़ारी भी बन गया।

अ़र्सए दराज़ से मेरी ख़्वाहिश थी कि मैं बाबुल मदीना (कराची) जा कर **दा'वते इस्लामी** के ज़ेरे इन्तिज़ाम होने वाले उस **इज्तिमाए़ मीलाद** में शिर्कत कर सकूं जो **जश्ने विलादते सरकार** के मौक़अ़ पर होने वाला रूए ज़मीन का ग़ालिबन **सब से बड़ा**

इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त है जिस में मेरे पीरो मुर्शिद **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه भी शिर्कत फ़रमाते हैं। आख़िर कार मेरी मुराद बर आई और मैं सि. 1429 हि. में रबीउ़न्नूर शरीफ़ की बारहवीं शब होने वाले **इज्तिमाए मीलाद** में शिर्कत के लिये ककरी ग्राउन्ड बाबुल मदीना (कराची) जा पहुंचा।

जश्ने विलादत की ख़ुशी में वहां होने वाला चराग़ां और इस्लामी भाइयों का ज़ौक़ो शौक़ देख कर मैं हैरान रह गया। ककरी ग्राउन्ड की वसीओ अ़रीज़ **इज्तिमाअ़ गाह** में हर त़रफ़ सब्ज़ इमामों और हरियाले परचमों की बहारें थीं। इज्तिमाए़ मीलाद में **नबिय्ये रह़मत**, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सना ख़्वानी की गई फिर **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का सुन्नतों भरा बयान हुवा। इस के बा'द **शु-रकाए इज्तिमाअ़ को स-ह़री** पेश की गई क्यूं कि कसीर इस्लामी भाई अपने **आक़ा** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की आमद की ख़ुशी में शुक्राने के त़ौर पर **रोज़ा** भी रखते हैं। स-ह़री के बा'द **सुब्हे बहारां** की रूह़ परवर निशस्त का आग़ाज़ हुवा। ना'त ख़्वां इस्लामी भाई झूम झूम कर **म-दनी आक़ा** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत के मु-तअ़ल्लिक़ इस्तिक़्बालिया अश्आ़र पढ़ रहे थे। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه पर अ़जीब **कैफ़िय्यत** त़ारी थी, हर त़रफ़ **''सरकार** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **की आमद मरह़बा''** के ना'रों

की गूंज थी। (मैं इज्तिमाअ़ गाह में येह तमाम रूह़ परवर मनाज़िर ब ज़रीअ़ए स्क्रीन देख रहा था) अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه पर त़ारी **रिक़्क़त** और **सरकार** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत की ख़ुशी में आप के **झूमने** का वालिहाना अन्दाज़ देख कर मैं अपने आंसू न रोक सका, इसी दौरान मैं ने आंखें बन्द कर लीं। अचानक मुझ पर ग़ुनूदगी त़ारी हो गई और मेरे सामने एक **नूरानी** मन्ज़र उभर आया, क्या देखता हूं कि मेरे सामने **दो जहां के ताजवर**, सुल्त़ाने बह़रो बर, नूर के पैकर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم सफ़ेद **लिबास** ज़ैबे तन फ़रमाए, **सब्ज़ इमामा** शरीफ़ का ताज सजाए जल्वा फ़रमा हैं, चेह्रए मुबा-रका चांद से ज़ियादा **रोशन** है और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم बहुत **ख़ुश** नज़र आ रहे थे। लबहाए मुबा-रका को जुम्बिश हुई और रह़मत के फूल झड़ने लगे, अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए : **"मेरे ग़ुलाम इल्यास को मेरा पैग़ाम पहुंचा दो कि अल्लाह तआ़ला ने इज्तिमाअ़ में शरीक तमाम लोगों की बख़्शिश व मग़्फ़िरत फ़रमा दी है।"**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ख़ुश नसीब आ़शिक़ाने रसूल को बिशारते उ़ज़्मा मुबारक हो! **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत पर नज़र रखते हुए क़वी उम्मीद है कि जिन बख़्त वरों के लिये येह **म-दनी ख़्वाब** देखा गया है اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उन का ख़ातिमा ईमान पर होगा और वोह

म-दनी आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के तुफ़ैल जन्नतुल फ़िरदौस में आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का पड़ोस पाएंगे। ताहम येह याद रहे ! कि उम्मती जो ख़्वाब देखे वोह शरअ़न **हुज्जत** नहीं होता, ख़्वाब की बिशारत की बुन्याद पर किसी को **क़त्ई जन्नती** नहीं कहा जा सकता। **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ **की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो**

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

《8》 डान्स करना मेरा मह़बूब मश्ग़ला था

मर्कज़ुल औलिया (लाहोर) के एक मुक़ीम इस्लामी भाई का बयान कुछ इस त़रह़ है : तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मुश्कबार म-दनी माह़ोल से वाबस्तगी से क़ब्ल मैं एक नामी गिरामी डान्सर था। مَعَاذَاللّٰہ इस क़बीह़ व शनीअ़ काम को अपने लिये ए'ज़ाज़ जानता था। **शादी बियाह व ख़ुशी की तक़रीबात में जा कर डान्स करना तो मेरा मह़बूब मश्ग़ला था,** इसी ग़फ़्लत में मेरी ज़िन्दगी के शबो रोज़ फ़ुज़ूलियात व लग़्वियात की नज़्र होते चले जा रहे थे। मेरी ज़िन्दगी के सियाह पहरों में हिदायत का आफ़्ताब कुछ इस त़रह़ नुमूदार हुवा कि माहे रबीउ़न्नूर का बा ब-र-कत महीना अपने जल्वे लुटा रहा था और म-दनी आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दीवाने झूम झूम कर अपनी अ़क़ीदत व मह़ब्बत का इज़्हार कर रहे

थे। ख़ुश क़िस्मती से दा'वते इस्लामी के तह़्त हमारे अ़लाक़े में एक इज्तिमाए़ ज़िक्रो ना'त का एहतिमाम किया गया। मैं ने भी इस बा ब-र-कत इज्तिमाअ़ में शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल की। इज्तिमाए़ ज़िक्रो ना'त के पाकीज़ा माह़ोल ने मेरे ग़ुबार आलूद क़ल्ब को साफ़ सुथरा कर दिया, आह! मैं दुन्या की मह़ब्बत में बद मस्त मोज मेले ही को ज़िन्दगी समझ बैठा था जब कि ह़क़ीक़त तो इस के बर अ़क्स थी। उस इज्तिमाए़ ज़िक्रो ना'त में मुझे बहुत सुरूर आया और मेरे दिल की कैफ़िय्यत बदलने लगी। सरकार की आमद मरह़बा, दिलदार की आमद मरह़बा के ना'रों पर मैं झूम उठा, चुनान्चे मैं सियाह कार इ़श्क़े मुस्त़फ़ा की दौलत लिये घर लौटा। अब तो मेरी ज़िन्दगी में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो चुका था, मैं ने सिद्क़े क़ल्ब से अपने गुज़श्ता गुनाहों से तौबा की और अ़ज़्मे मुसम्मम कर लिया कि आइन्दा सआ़दतों भरी ज़िन्दगी बसर करूंगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे दीने मतीन पर इस्तिक़ामत की दौलत अ़त़ा फ़रमाए। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾9﴿ जश्ने विलादत और दा'वते इस्लामी

मदीना टाउन सरदारआबाद (फ़ैसलआबाद, पाकिस्तान) के इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : मेरे बड़े भाई के

दोस्त ने एक बार इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए मुझे बताया कि तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के तह़ूत रबीउ़न्नूर शरीफ़ के सिल्सिले में इज्तिमाए़ ज़िक्रो ना'त हो रहा है, इस बा ब-र-कत इज्तिमाअ़ में शिर्कत करने वाले कई इस्लामी भाइयों की ज़िन्दगियों में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो जाता है और वोह सलातो सुन्नत की राह पर गामज़न हो जाते हैं। इज्तिमाअ़ के इख़्तिताम पर स-ह़री के लिये खाने का इन्तिज़ाम भी किया जाता है और कसीर इस्लामी भाई रोज़ा भी रखते हैं चुनान्चे मैं उन के साथ इज्तिमाए़ ज़िक्रो ना'त में शिर्कत के लिये तय्यार हो गया। जब हमारी गाड़ी इज्तिमाअ़ गाह के क़रीब पहुंची तो मैं ह़ैरान रह गया कि **कमो बेश एक किलो मीटर पहले ही से चराग़ां शुरूअ़ हो गया और इज्तिमाअ़ गाह में भी चराग़ा का ज़बर दस्त एहतिमाम किया गया था।** मैं बड़ा मु-तअस्सिर हुवा कि दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता इस्लामी भाई जश्ने विलादत की ख़ुशी में इस क़दर धूमें मचाते हैं। कुछ देर के बा'द हम ने बस से उतर कर पैदल चलना शुरूअ़ कर दिया, बसों की लम्बी लम्बी क़ित़ारों को उ़बूर करते हुए हम बढ़ते ही चले जा रहे थे मगर चराग़ां का सिल्सिला ख़त्म न हो रहा था। वोह एक पुरकैफ़ व रूह़ परवर मन्ज़र था, बिल आख़िर मैं इज्तिमाअ़ गाह में दाख़िल हो गया मगर बयान सुनने के बजाए बस्तों (स्टॉलों) पर घूमने लगा,

एक ख़ैर ख़्वाह इस्लामी भाई ने बड़ी महब्बत व शफ़्क़त से समझा कर मुझे बयान सुनने के लिये बिठा दिया। बयान के बा'द लाइटें बुझा दी गईं और **ज़िक्रुल्लाह** शुरूअ़ हो गया। दुआ़ के वक़्त मेरी ह़ालत तब्दील हो गई, मुझ जैसा शख़्स जिसे कभी रोना न आया था आज उस की आंखों से आंसू रुकने का नाम नहीं ले रहे थे। इज्तिमाअ़ में शिर्कत से पहले की और अब की कैफ़िय्यत में वाज़ेह़ तब्दीली मह़सूस कर रहा था। यूं मेरा म-दनी माह़ोल से वाबस्ता इस्लामी भाइयों से मेलजोल होने लगा। एक रोज़ एक इस्लामी भाई ने नमाज़े फ़ज्र में इस्लामी भाइयों को जगाने के लिये "**सदाए मदीना**" लगाने का ज़ेहन दिया। चुनान्चे **मैं रोज़ाना सदाए मदीना लगाने वाले आ़शिक़ाने रसूल के हमराह जाने लगा और ख़ुद भी सदाए मदीना लगाने लगा।** इस के बा'द मैं ने इ़मामा सजा लिया और चेहरे पर सुन्नत के मुत़ाबिक़ दाढ़ी भी सजा ली। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत नसीब फ़रमाए।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

《10》 रह़मत की बूंदें

मर्कज़ुल औलिया (लाहोर, पंजाब) में रिहाइश पज़ीर

एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है : मैं एक मॉडर्न नौ जवान था, पाकीज़ा माहोल से महरूमी के बाइस मैं गुनाहों में बुरी त़रह़ घिर चुका था। मेरे मुश्कबार म-दनी माहोल अपनाने की तदबीर कुछ यूं बनी कि ख़ुश क़िस्मती से मेरी मुलाक़ात एक इस्लामी भाई से हो गई उन्हों ने मुझे 12 रबीउ़न्नूर शरीफ़ की रात होने वाले इज्तिमाए़ ज़िक्रो ना'त की दा'वत पेश की, उन की इन्फ़िरादी कोशिश की ब-र-कत से मैं भी उस इस्लामी भाई के हमराह इज्तिमाअ़ गाह में पहुंच गया। आधी रात तक ना'त ख़्वानी का सिल्सिला होता रहा, सख़्त गर्मी के दिन थे और **इज्तिमाअ़ गाह में आ़शिक़ाने मुस्त़फ़ा का ठाठें मारता हुवा समुन्दर नज़र आ रहा था।** शैत़ान बद बख़्त को कब गवारा है कि कोई सुन्नतों भरा म-दनी माहोल अपनाए और सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की आमद की धूमें मचाए। जैसा कि मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن का शे'र है,

निसार तेरी चहल पहल पर हज़ारों ईदें रबीउ़ल अव्वल
सिवाए इब्लीस के जहां में सभी तो ख़ुशियां मना रहे हैं

लिहाज़ा मुझे भी शैत़ाने लईन ने वर-ग़लाना शुरूअ़ कर दिया ह़त्ता कि मैं उस के मक्रो फ़रेब का शिकार हो गया और बस यूंही इज्तिमाअ़ से वापस जाने की ठान ली मेरी ख़ुश नसीबी कि उस इस्लामी भाई ने इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए ह़िक्मत भरे अन्दाज़ में कहा कि आप थोड़ी देर रुक जाएं इकठ्ठे चलेंगे। उन की

इन्फ़िरादी कोशिश की ब-र-कत से اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं वापस जाने से रुक गया। स-ह़री के बा'द सुब्ह़े बहारां की आमद पर **मरह़बा या मुस्त़फ़ा !** की गूंज में ख़ुशी का ऐसा समां बंधा कि **ठन्डी ठन्डी हवा के साथ हलकी हलकी रह़मत की बूंदें भी बरसने लगीं।** इन मुबारक घड़ियों में **अल्लाह** तआ़ला से उस के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सदक़े दुआ़एं मांगी जा रही थीं और येह शे'र पढ़ा जा रहा था,

मांग लो मांग लो चश्मे तर मांग लो मांगने का मज़ा आज की रात है

बस येही वोह लम्ह़ात थे कि मेरी दिल की दुन्या बदल गई और اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं अपने साबिक़ा गुनाहों से ताइब हो कर म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो गया।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾11﴿ इज्तिमाए जश्ने विलादत ने दिल का ज़ंग दूर कर दिया

सिब्बी (बलूचिस्तान, पाकिस्तान) के मुक़ीम इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : कुछ अ़र्सा पहले मैं ग़फ़्लत भरी ज़िन्दगी गुज़ार रहा था। मुआ़शी पस मांदगी की बिना पर मैं कोई ता'लीम ह़ासिल न कर सका था, बचपन ही से होटल में काम करता था, यहां तक कि मेरी ज़िन्दगी के चौबीस बरस बीत गए।

एक दिन कुछ दोस्तों ने मुझे तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के तह़त ईदे मीलादुन्नबी के सिल्सिले में होने वाले इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त में शिर्कत की दा'वत पेश की, मैं ने हामी भर ली और इज्तिमाअ़ में चला आया, यहां आ कर देखा कि इस्लामी भाई एक अच्छी ख़ासी ता'दाद में जम्अ़ हैं और झूम झूम कर सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की आमद के क़सीदे पढ़ रहे हैं **आमदे मुस्त़फ़ा मरह़बा के ना'रों की चार सू गूंज थी ।** आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के जश्ने विलादत के इज्तिमाअ़ की ब-र-कत से मेरे दिल से गुनाहों का ज़ंग दूर होने लगा और आक़ाए दो जहां صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत मेरे दिल में घर करने लगी । गुनाहों भरी ज़िन्दगी सुन्नतों के सांचे में ढल गई और मैं दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से क़रीब होता चला गया । इस के बा'द गाहे गाहे हफ़्तावार इज्तिमाअ़ में शिर्कत करता रहा, **इस्लामी भाइयों की शफ़्क़तों और इन्फ़िरादी कोशिश के नतीजे में बिल आख़िर मैं म-दनी माह़ोल से मुकम्मल वाबस्ता हो गया ।** येह बयान देते वक़्त اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं दा'वते इस्लामी के बैनल अक़्वामी इज्तिमाअ़ मदीनतुल औलिया मुलतान में शरीक हो कर इज्तिमाअ़ की बहारें लूट रहा हूं ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾12﴿ दिल की कलियां महका दीं

गुलज़ारे त़यबा (सरगोधा) के मुक़ीम इस्लामी भाई कुछ इस त़रह़ तह़रीर करते हैं : मैं म-दनी माह़ोल से वाबस्तगी से क़ब्ल गुनाहों की तारीक वादियों में भटक्ता फिर रहा था **जब से मैं ने आंख खोली सामने टी.वी ही नज़र आया ।** ज़ाहिर है घर में टी.वी हो तो फ़िल्मों, डिरामों और गाने, बाजों की नुहूसत से बचना कितना मुश्किल होगा । इस क़िस्म के माह़ोल की वजह से मैं फ़िल्मों, डिरामों और गाने बाजों का रसिया हो चुका था । एक मरतबा मैं एक दुकान के क़रीब से गुज़रा तो वहां लगे बेनर को देख कर एक दम रुक गया । उस को बग़ौर पढ़ा तो मा'लूम हुवा कि 14 रबीउ़ल ग़ौस सि. 1426 हि. ब मुत़ाबिक़ 23 मई सि. 2005 ई. को दा'वते इस्लामी के तह़त एक बहुत बड़े इज्तिमाए़ ज़िक्रो ना'त का एहतिमाम किया गया है, जिस में रुक्ने शूरा सुन्नतों भरा बयान फ़रमाएंगे । मुझे भी इश्तियाक़ हुवा कि मैं भी इस सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत करूं चुनान्चे मैं मुक़र्ररा तारीख़ को उस सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शरीक हो गया । दौराने इज्तिमाअ़ सना ख़्वाने मुस्त़फ़ा की **पुरसोज़ ना'तों ने दिल की कलियां महका दीं**, सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की आमद मरह़बा ! की सदाएं रूह़ को तस्कीन पहुंचा रही थीं लेकिन न जाने दिल में दा'वते इस्लामी की मह़ब्बत क़रार नहीं पकड़ रही थी, वसाविस पाकीज़ा निय्यतों को मु-त-ज़लज़िल कर रहे थे, इसी अस्ना में मेरी नज़र मुबल्लिगे़

दा'वते इस्लामी (रुक्ने शूरा) पर पड़ी तो उन के नूरानी चेहरे की ज़ियारत ही से बहुत से शुकूको शुब्हात रफ़अ़ हो गए। जब उन का सुन्नतों भरा बयान सुना तो **अल्फ़ाज़ तीर ब हदफ़ का काम कर गए और मेरा दिल चोट खा गया।** दौराने बयान उन्हों ने बानिये दा'वते इस्लामी, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की सीरत से आगाह करते हुए बताया कि आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपनी बेटी को वोही जहेज़ अ़ता फ़रमाया है कि जो हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी चहीती शहज़ादी ह़ज़रते सय्यिदह फ़ाति़-मतुज़्ज़हरा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا को अ़ता फ़रमाया है। येह वाक़िआ़ सुन कर तो मेरे दिल में आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से अ़क़ीदत की कलियां खिल उठीं और मैं आप के इ़श्क़े रसूल से मु-तअस्सिर हुए बिग़ैर न रह सका। चुनान्चे इस सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ ज़िक्रो ना'त की ब-र-कत से मेरे ज़ंग आलूद दिल पर ऐसी चोट लगी कि मैं दा'वते इस्लामी के मुश्कबार महके महके म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो गया। ता दमे तह़रीर मैं गुनाहों से तौबा कर के **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़ताओं से हुसूले इ़ल्मे दीन के लिये दा'वते इस्लामी के जामिअ़तुल मदीना में दर्से निज़ामी (आ़लिम कोर्स) की सआ़दत ह़ासिल कर रहा हूं। अल्लाह तआ़ला हमें इस्तिक़ामत की दौलत अ़ता फ़रमाए।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आप भी म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये

ख़रबूज़े को देख कर ख़रबूज़ा रंग पकड़ता है, तिल को गुलाब के फूल में रख दो तो उस की सोह़बत में रह कर गुलाबी हो जाता है। इसी त़रह़ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत में रहने वाला **अल्लाह** और उस के रसूल عَزَّ وَجَلَّ وصَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मेहरबानी से बे वक़्अ़त पथ्थर भी **अनमोल हीरा** बन जाता, ख़ूब जग-मगाता और ऐसी शान से पैके अजल को **लब्बैक** कहता है कि देखने सुनने वाला उस पर रश्क करता और ऐसी ही मौत की आरज़ू करने लगता है। आप भी तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये। अपने शहर में होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत और **राहे ख़ुदा** में सफ़र करने वाले आ़शिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र कीजिये और शैख़े त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़ता कर्दा **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल कीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप को दोनों जहां की ढेरों भलाइयां नसीब होंगी।

मक़्बूल जहां भर में हो दा'वते इस्लामी

सदक़ा तुझे ऐ रब्बे ग़फ़्फ़ार मदीने का

ग़ौर से पढ़ कर येह फ़ॉर्म पुर कर के तफ़्सील लिख दीजिये

जो इस्लामी भाई **फ़ैज़ाने सुन्नत** या **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के दीगर **कुतुब व रसाइल** सुन या पढ़ कर, बयान की केसिट सुन कर या हफ़्तावार, सूबाई व बैनल अक़्वामी **इज्तिमाआ़त** में शिर्कत या **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र या **दा'वते इस्लामी** के किसी भी म-दनी काम में शुमूलिय्यत की ब-र-कत से म-दनी माहोल से वाबस्ता हुए, ज़िन्दगी में **म-दनी इन्क़िलाब** बरपा हुवा, नमाज़ी बन गए, दाढ़ी, इमामा वग़ैरा सज गया, आप को या किसी अ़ज़ीज़ को हैरत अंगेज़ तौ़र पर **सिह्हत** मिली, परेशानी दूर हुई, या मरते वक़्त **कलिमए त़य्यिबा** नसीब हुवा या अच्छी ह़ालत में **रूह़ क़ब्ज़** हुई, मर्ह़ूम को अच्छी ह़ालत में **ख़्वाब** में देखा, **बिशारत** वग़ैरा हुई या **ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या** के ज़रीए आफ़ात व बलिय्यात से नजात मिली हो तो हाथों हाथ इस फ़ॉर्म को पुर कर दीजिये और एक सफ़्हे पर वाक़िए़ की तफ़्सील लिख कर इस पते पर भिजवा कर एह़सान फ़रमाइये **"शो'बए अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **मजलिसे अल मदी-नतुल इ़ल्मिय्या फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मद आबाद गुजरात"**

नाम मअ़ वल्दिय्यत :..... उ़म्र..... किन से मुरीद या त़ालिब हैं..... ख़त़ मिलने का पता.....

फ़ोन नम्बर (मअ़ कोड) :..... ई मेइल एड्रेस .....

इन्क़िलाबी केसिट या रिसाले का नाम :..... सुनने, पढ़ने या वाक़िआ़ रूनुमा होने की तारीख़/महीना/ साल :..... कितने दिन के म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र किया :..... मौजूदा तन्ज़ीमी ज़िम्मादारी.....

मुन्दरिजए बाला ज़राएअ़ से जो ब-र-कतें ह़ासिल हुईं, फ़ुलां फ़ुलां बुराई छूटी वोह तफ़्सीलन और पहले के अ़मल की कैफ़िय्यत (अगर इ़ब्रत के लिये लिखना चाहें) म-सलन फ़ेशन परस्ती, डकैती वग़ैरा और **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ज़ाते मुबा-रका से ज़ाहिर होने वाली **ब-रकात व करामात** के **"ईमान अफ़्रोज़ वाक़िआ़त"** मक़ाम व तारीख़ के साथ एक सफ़्हे पर **तफ़्सीलन तह़रीर फ़रमा दीजिये ।**

म-दनी मश्वरा

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ शैख़े त़रीक़त, **अमीरे अहले सुन्नत** ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه दौरे ह़ाज़िर की वोह यगानए रोज़गार हस्ती हैं कि जिन से श-रफ़े बैअ़त की ब-र-कत से लाखों मुसल्मान गुनाहों भरी ज़िन्दगी से ताइब हो कर **अल्लाहु रह़मान** عَزَّوَجَلَّ के अह़काम और उस के **प्यारे ह़बीबे लबीब** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों के मुत़ाबिक़ पुर सुकून ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं। ख़ैर ख़्वाहिये मुस्लिम के मुक़द्दस जज़्बे के तह़्त हमारा **म-दनी मश्वरा** है कि अगर आप अभी तक किसी जामेए शराइत़ पीर साह़िब से बैअ़त नहीं हुए तो शैख़े त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के फ़ुयूज़ो ब-रकात से **मुस्तफ़ीद** होने के लिये इन से **बैअ़त** हो जाइये। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत में काम्याबी व सुर्ख़-रूई नसीब होगी।

मुरीद बनने का त़रीक़ा

अगर आप मुरीद बनना चाहते हैं तो अपना और जिन को **मुरीद या त़ालिब** बनवाना चाहते हैं उन का नाम नीचे तरतीब वार मअ़ वल्दिय्यत व उ़म्र लिख कर **''मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मद आबाद गुजरात''** के पते पर रवाना फ़रमा दें तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हें भी सिल्सिलए **क़ादिरिय्या र-ज़विय्या अ़त्तारिय्या** में दाख़िल कर लिया जाएगा।

(पता अंग्रेज़ी के केपीटल ह़ुरूफ़ में लिखें)

E.Mail : attar@dawateislami.net

(1) नाम व पता बॉल पेन से और बिल्कुल साफ़ लिखें, ग़ैर मशहूर नाम या अल्फ़ाज़ पर लाज़िमन ए'राब लगाएं। अगर तमाम नामों के लिये एक ही पता काफ़ी हो तो दूसरा पता लिखने की ह़ाजत नहीं। (2) एड्रेस में मह़रम या सर परस्त का नाम ज़रूर लिखें। (3) अलग अलग मक्तूबात मंगवाने के लिये जवाबी लिफ़ाफ़े साथ ज़रूर इरसाल फ़रमाएं।

नम्बर शुमार	नाम	मर्द/ औ़रत	बिन/ बिन्ते	बाप का नाम	उ़म्र	मुकम्मल एड्रेस

म-दनी मश्वरा : इस फ़ॉर्म को मह़फ़ूज़ कर लें और इस की मज़ीद कॉपियां करवा लें।